

## आधुनिक औद्योगिक संगठन

(MODERN INDUSTRIAL ORGANISATION)

आधुनिक औद्योगिक संगठन (Modern Industrial Organisation) परम्परागत औद्योगिक संगठन से अनेक मुद्दों के आधार पर अलग है अनेक तथ्यों में यह नवीनता को स्वीकार किए हुए है तथा आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था के अनुरूप अपने-आपको ढाले हुए है। उद्यमकर्ता (Entrepreneur) ही आधुनिक औद्योगिक संगठन का मुख्य चालक होता है। आधुनिक औद्योगिक संगठन का स्वरूप इसी बात पर निर्धारित होता है कि आज का उद्योग वस्तुतः किस प्रकार संगठित एवं वास्तविक रूप से संचालित होता है। आधुनिक औद्योगिक संगठन का स्वरूप इस बात पर भी निर्भर करता है कि उसकी कार्य-प्रणाली क्या है तथा उनके कार्य क्या हैं? उद्योग का स्तर एवं भविष्य भी आधुनिक औद्योगिक संगठन के स्वरूप को निर्धारित करता है।

आधुनिक औद्योगिक संगठन के स्वरूप को निम्न आधार पर समझा जा सकता है—

(1) पेशेवर (Professional)—आधुनिक औद्योगिक संगठन का स्वरूप प्रमुख रूप से पेशेवर है। औद्योगिक संगठन का प्रमुख उद्देश्य व्यापारिक हित को साधना होता है जनता की भलाई तथा श्रमिकों की कल्याणकारी योजनाओं से ये अपने-आपको सम्बन्धित नहीं रखते थे। अगर ये कभी श्रमिकों के संघर्ष के सहगामी भी बनते हैं तो उनका प्रमुख उद्देश्य इसके माध्यम से अपना हित साधना होता है। वस्तुतः व्यापारिक हित साधना ही उनका प्रमुख उद्देश्य रह गया है। इसके लिए ये राष्ट्रीय कानून या अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक कानून की अवहेलना करने से भी नहीं चूकते हैं।

(2) अधिनायकीय (Dictatorial)—आधुनिक औद्योगिक संगठन अधिनायकीय स्वरूप को ग्रहण किए हुए है। राष्ट्रीय कानून के अन्तर्गत लिमिटेड कम्पनी के नियम का पालन नहीं करना ये श्रेयस्कर समझते हैं तथा ऐसा करते हैं। औद्योगिक संगठन के ऊपर अपने स्वामित्व एवं अधिकार को बरकरार रखने के लिए स्वयं प्रबन्धक एवं महाप्रबन्धक के साथ मालिक भी बने रहते हैं या ऐसे व्यक्ति को प्रबन्धक बनाया जाता है जो उनके स्वामित्व को बरकरार रखने में सहायक होता है। इस प्रकार आधुनिक औद्योगिक संगठन अधिनायकवादी स्वरूप की भावना से ग्रसित है। अपने स्वामित्व को बरकरार ये किसी

भी हालत में रखते हैं तथा अधिनायकवाद की भावना के अन्तर्गत ये अपने व्यापारिक हित को अत्यधिक प्रश्रय देते हैं।

(3) पुश्तैनी (Paternalistic)—आधुनिक औद्योगिक संगठन अपने पुश्तैनी अधिकार को बरकरार रखते हैं तथा इसके लिए वैध-अवैध किसी भी प्रकार का कार्य करते हैं। टाटा ग्रुप, बिरला ग्रुप, अम्बानी ग्रुप, मोदी ग्रुप, डालमिया ग्रुप, कोकाकोला ग्रुप आदि बड़ी औद्योगिक इकाईयाँ सरकार के कानून के अन्तर्गत भी अपने पुश्तैनी अधिकार को बरकरार रखने में सक्षम हैं। इन बड़े व्यापारिक संगठनों का एक ही उद्देश्य होता है कि अधिक से अधिक पुश्तैनी व्यापार एवं सम्पत्ति को बढ़ाया जाए।

(4) वैधानिक (Constitutional)—आधुनिक औद्योगिक संगठन का वैधानिक स्वरूप भी होता है। आधुनिक औद्योगिक संगठन अपने व्यापार को अत्यधिक बढ़ाने के साथ ही साथ इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि राष्ट्रीय कानून की परिधि या गिरफ्त में वे नहीं आए। इसके लिए वह अपने शेयरों का सर्वाधिक भाग शेयर-होल्डरों की अपेक्षा अपने पास रखता है जिससे कम्पनी के ऊपर उनका पुश्तैनी स्वामित्व भी बरकरार रखता है। दूसरी ओर वे सरकार द्वारा समय-समय पर किए गए औद्योगिक सुधार का भी पालन करते हैं जिससे वैधानिक स्वरूप भी बरकरार रहता है। जब कभी श्रम कानून के अन्तर्गत किसी प्रकार का विवाद उठ खड़ा होता है तो ये अपने-आपको वैधानिकता के दायरे में रखना अधिक पसंद करते हैं।

(5) परामर्शक (Consultative)—आधुनिक औद्योगिक संगठन परामर्शक स्वरूप को भी ग्रहण करता है। प्रत्येक राज्य का एक वाणिज्यिक संगठन होता है जिसे चैम्बर ऑफ कामर्स (Chamber of Commerce) के नाम से जाना जाता है। इन सभी राज्य-स्तरीय वाणिज्यिक संघों का एक अखिल भारतीय वाणिज्यिक संघ होता है। अखिल भारतीय वाणिज्यिक संघ समय-समय पर सरकार से परामर्श भी करते हैं, ताकि देश की औद्योगिक स्थिति किसी प्रकार सुदृढ़ हो। मुद्रास्फीति, थोक मूल्य सूचकांक आदि पर ये समय-समय पर राष्ट्रीय परामर्श भी जारी करते हैं। आज के आर्थिक वैश्वीकरण (Economic globalisation) के युग में ये राष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए सरकार को अनेक बिन्दुओं पर परामर्श भी देती हैं। इस परामर्श का उद्देश्य विश्व औद्योगिक स्पर्धा के अनुरूप अपने-आपको ढालना होता है ताकि औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में ये टिके रहें। इस प्रकार ये एक परामर्शक का भी कार्य करते हैं।

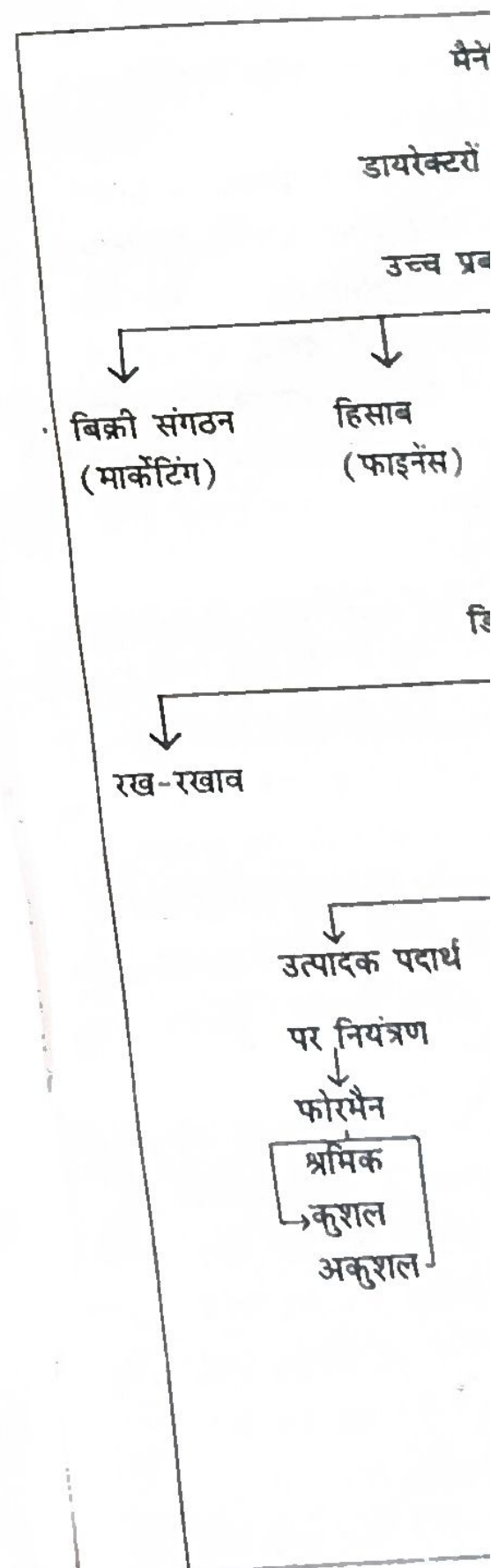
आधुनिक औद्योगिक संगठन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—औपचारिक संगठन (Formal Organisation) एवं अनौपचारिक संगठन (Informal Organisation)। दोनों का वर्णन निम्न रूप में व्यक्त किया जा सकता है—

1. औपचारिक संगठन (Formal Organisation)—एक बृहद औद्योगिक संस्थान के समस्त कार्यों को समन्वित रीति से चलाने के लिए एक औपचारिक संगठन व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है जो प्रत्येक संस्थान में अलग प्रकार का होता है। इसकी संरचना बहुत कुछ औद्योगिक इकाई के आकार पर निर्भर करती है। औद्योगिक इकाई की उत्पादन-प्रणाली एवं उत्पादित वस्तुएँ भी इस संगठन की संरचना को प्रभावित करती हैं।

आधुनिक औद्योगिक संगठन का औपचारिक होता है जिसे निम्न चित्र के माध्यम से

औपचारिक

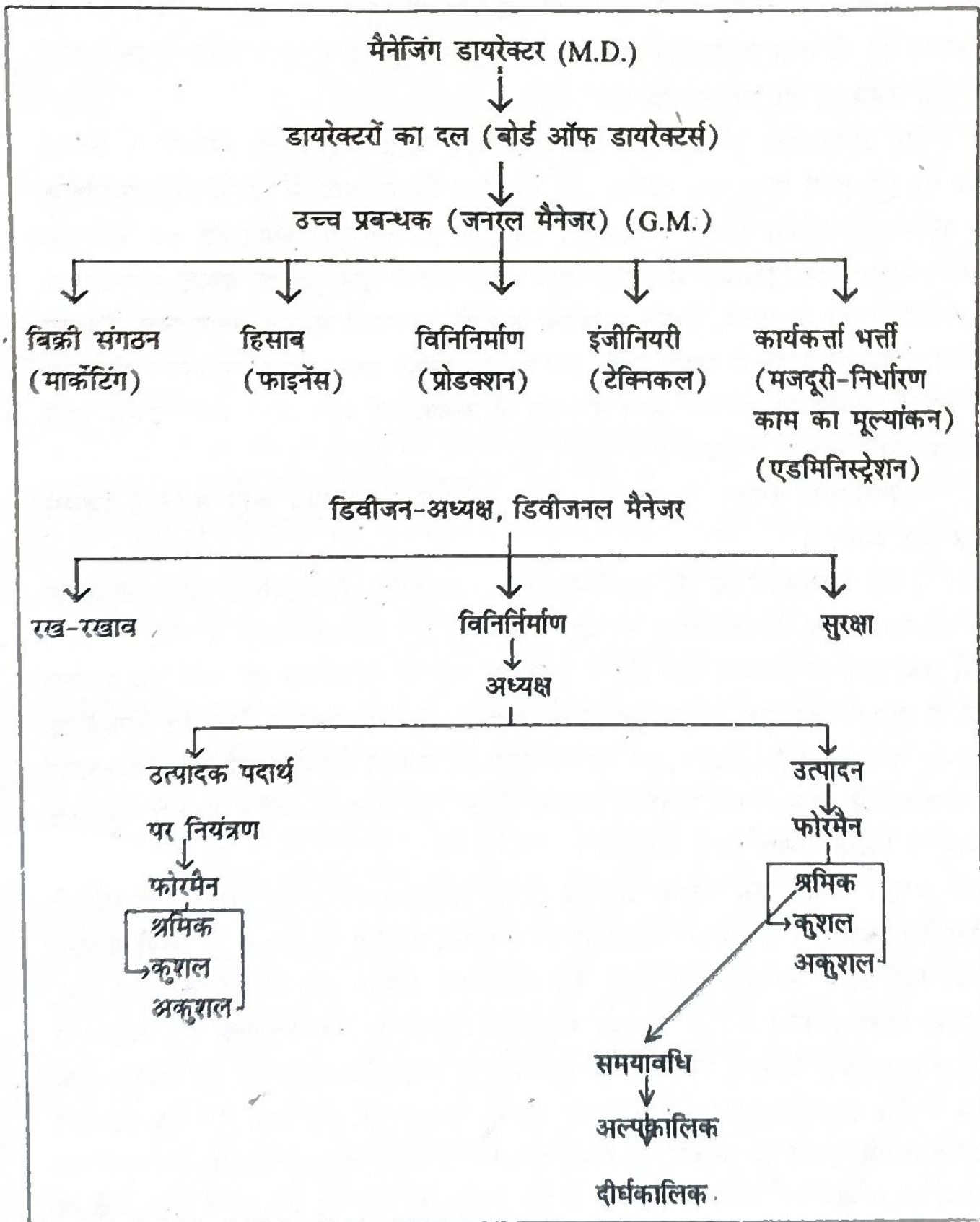
(पदसोपानिक)



आधुनिक औद्योगिक संगठन का औपचारिक संगठन पदसोपानीय क्रम के अनुरूप व्यवस्थित होता है जिसे निम्न चित्र के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है—

## औपचारिक संगठन

(पदसोपानिक स्तर के अनुरूप व्यवस्थित)



(iii) टेक्सटाइल संगठन : इस संगठन का कार्य टेक्सटाइल से सम्बन्धित उद्योग के सम्बन्ध में व्यवस्थित क्रम का निर्धारण करना होता है ।

(iv) कार उद्योग संगठन,

(v) साइकिल उद्योग संगठन,

(vi) वायुयान उद्योग संगठन आदि ।

वस्तुतः औपचारिक संगठन के अन्तर्गत वे सभी औद्योगिक संगठन आते हैं जिनके सभी अवयव लाइन एवं स्टाफ के आधार पर पदसोपानिक क्रम में व्यवस्थित होते हैं तथा जिसमें काफी तादाद में कर्मचारियों को रोजगार प्राप्त होता है । इसके अतिरिक्त औपचारिक संगठन संवैधानिक कानून से बंधे होते हैं ।

**अनौपचारिक संगठन (Informal Organisation) :** अनौपचारिक संगठन वह संगठन होता है जो लाइन एवं स्टाफ के नियम के अनुसार पदसोपानिक क्रम में व्यवस्थित नहीं होता तथा बड़ी मात्रा में इसमें कर्मचारियों को कार्य करने का मौका नहीं मिलता । यह संगठन एक प्रकार से लघुतर या व्यक्तिगत इकाई की तरह होता है । इस प्रकार अनौपचारिक संगठन एक प्रकार से सहायक संगठन की तरह होता है जिसका सम्बन्ध प्रत्यक्षरूप से देश की अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित नहीं होता । जैसे-रिक्शा चालक संगठन, ऑटो रिक्शा चालक संगठन, सब्जी-विक्रेता संगठन आदि ।